स्व. डॉ. वसंतराव देशपांडे स्मृति संगीत समारोह में कथक नृत्य प्रस्तुत करती मुंबई की नृत्यांगना शीला मेहता।
संबंधित खबर पृष्ठ 20 पर (छाया : छोटू वैतागे)

कला में है आत्मा छूने की क्षमता

प्रख्यात नृत्यांगना शीला मेहता से बातचीत

कत्थक को दिल से प्रेम किया

मित्र प्रतिनिधि | नागपुर

पांच वर्ष की आयु से नृत्य का अभ्यास कर रही शीला मेहता ने मणिपुरी, भरतनाट्यम और कत्थक नृत्य शैलियां सीखीं। वे कोलकाता में जन्मी और जीवन के चालीस वर्ष वहां नृत्य साधना करने के बाद पति के कार्य के चलते मुंबई आईं। जहां नुपूर झंकार अकादमी परफार्मिंग आर्ट एंड रिसर्च सेंटर की स्थापना की। वे कहती हैं कि बचपन के दिनों में मणिपुरी नृत्य अच्छा करती थीं। उस पर खूब सराहना मिलती और प्रोत्साहन के कारण वे इसे और अच्छा करतीं। शीला मेहता को यूएसए का ओवरसीज नाट्य अवार्ड, कोलकाता का नृत्य साधना अवार्ड मिल चुका है। इसके अलावा संस्कृति विभाग की ओर से सीनियर फेलोशिप मिली है। वे बताती हैं कि स्वयं को कत्थक करते हुए वे अधिक सहज पाती हैं। यह बंधा हुआ नहीं है। इसमें रचनात्मकता को जगह है। तेज गति के इस नृत्य में लय ताल को अपने हिसाब से बदलाव किया जा सकता है। सितार या सारंगी व तबले के नए वादक के साथ इसे किया जा सकता है। इसमें अभिनय पक्ष महत्वपूर्ण है। वे बताती हैं कि बिरजू महाराज के काका शंभू महाराज एक ही लाइन पर पूरी रात नृत्य करते थे। इसमें इतनी विविधता है।

वे बताती हैं कि लखनऊ घराने का कत्थक पं. बिरजू महाराज की स्टाइल से जुड़ा है। उनके गुरु पं. विजयशंकर के पं. बिरजू महाराज गुरु रहे हैं। लोकनृत्य पर शीला मेहता ने काफी काम किया है। वे बताती हैं कि कत्थक नृत्य में सूक्ष्म भाव होते हैं। उसी प्रकार चारण भी सूक्ष्मता से गहरी बात कहते हैं। दोनों में कवित्त छंद होते हैं। इनमें रिदम होने से संगीत के भाव भी आ जाते हैं। रही भाषा की बात तो भावों के सामने वह कम मायने रखती है। चारणी साहित्य को वे कत्थक के माध्यम से प्रस्तुत करना चाहती हैं। यहां दोनों को जोड़कर साहित्य और संस्कृति का मिश्रण बनाया जाएगा। कोरियोग्राफी भी उन्होंने की। वे इंडियन काउंसिल ऑफ कल्चरल रिलेशन के पैनल से देश का प्रतिनिधित्व करते जर्मनी गई थीं। वहां देश की तस्वीर दिखाई। शास्त्रीय कार्यक्रमों में लोगों की कम उपस्थिति के लिए वे आयोजकों को जिम्मेदार मानती हैं। कला को वे मूल्य और संस्कार देने वाले माध्यम के रूप में देखती हैं। वे कहती हैं कि कला आत्मा को छूने की क्षमता रखती है। यह साधना की ओर ले जाती है। विदेश में कला तकनीक से जुड़ी जबकि भारत में आत्मा से महसूस होने वाली अनुभूति का माध्यम है।